कुल पृष्ठ संख्या– 28 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या 0955860

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिए)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1	12	19	05
2	06	20	05
3	5½	21	05
4	06	22	
5	06	23	
6	02	24	
7	02	25	
8	02	26	
9	02	27	
10	02	28	
11	02	29	
12	02	30	
13	02	31	
14	02	योग	79½
15	02	प्राप्तांकों का कुल योग (Round off)	
16	03	अंकों में	शब्दों में
17	03	80	अस्सी
18	03		

परीक्षक के हस्ताक्षर ______

संकेतांक 345639

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी ☐

विषय हिन्दी साहित्य

परीक्षा का दिन मंगलवार

दिनांक 10-03-2026

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालन अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ: 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 60 जी.एस.एम. ईको मैपलिथो कागज़ ही उपयोग में लिया गया है। 181 / 2026

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका, उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंसा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर ही अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगीः–

   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।

   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिए। परीक्षार्थी उत्तर पुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।

   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केल्क्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रॉनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध है।

   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिख कर लावें। टेबल के आस–पास कोई अनुचित सामग्री नहीं होनी चाहिए, इसकी जांच कर लें।

   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।

5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित हैं। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		खण्ड - अ
	1.	बहुविकल्पीय प्रश्न -
1	(i)	(द) चंबल।
1	(ii)	(अ) 1956।
1	(iii)	(स) बेर का।
1	(iv)	(ब) जगधर को।
1	(v)	(स) सब लोग अपनी आँखें बंद रखेंगे।
1	(vi)	(द) स्नान के बाद चंदन के तिलक के बगैर।
1	(vii)	(ब) हिमालय किधर है ?
1	(viii)	(द) महावट।
1	(ix)	(स) अभिनय।
1	(x)	(ब) बोले जाने वाले शब्द।
1	(xi)	(ब) शीर्ष पर।
1	(xii)	(स) कैसे।
12		

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति-

(i) ओज गुण।

(ii) क्लिष्टत्व दोष।

(iii) अर्थालंकार।

(iv) विशेषोक्ति अलंकार।

(v) कवित्त।

(vi) यमाताराजभानसलगा।

BSER-181/2025

3. अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न :-

(i) काव्य में जहाँ सीधे - सीधे सुबोध शब्दों के द्वारा काव्य रचना की जाती है, अर्थात् ऐसी काव्य रचना जिसका अर्थ सुनते ही समझ में आ जाता है, वहाँ प्रसाद गुण होता है।

(ii) छंद दो प्रकार के होते हैं-
(i) वर्णिक छंद
(ii) मात्रिक छंद

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
1	(iii)	---------------? कहानी लेखन कला को सीखने का सबसे अच्छा तरीका यही है, कि हम जाने-माने लेखकों की कहानियाँ पढ़े, और उनका विश्लेषण करना।
½	(iv)	------------? मौलिक शैली।
1	(v)	------------? पाठक वर्ग द्वारा अखबार में घटित होने वाली घटनाओं पर जो पत्र लिखे जाते हैं, उन्हे संपादक के नाम पत्र कहते है। यह एक विशाल पाठक वर्ग द्वारा अपने संपादक को लिखे जाते है।
1	(vi)	--------------? फीचर- फीचर एक सृजनात्मक, सुव्यवस्थित व आत्मनिष्ठ लेखन है, जिसका कार्य पाठकों को सूचना देना, शिक्षित करने के साथ-साथ मनोरंजन करना है।
5½		
	4.	अपठित गद्यांश-
1	(i)	--------? (द) प्रासंगिक।
1	(ii)	--------? (स) क्षमा।

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
1	(iii)	- - - - - - - - - - ? (द) भारत में अदम्य जीवन शक्ति का संचार हुआ।
1	(iv)	- - - - - - - - - - - ? "भारतीय संस्कृति का महत्त्व"।
1	(v)	- - - - - - - - - - - ? सांस्कृतिक चेतना की सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति सार्वभौम सत्य के आधार पर प्रतिष्ठित धार्मिक भावना और दार्शनिक चिन्तनधारा के माध्यम से हुई।
6	(vi)	- - - - - - - - - - ? इस गद्यांश में लेखक हमें भारतीय सांस्कृतिक चेतना का सार्वभौमिकरण करना चाहता है। इस मूल प्रतिपाद्य यही है कि हमें हमारी संस्कृति का सम्मान करना चाहिए, और पाश्चात्य संस्कृति पर ज्यादा आश्रित न होवे।
	5.	अपठित पद्यांश -
1	(i)	- - - - - - - - ? (स) सद्भाव आधारित आपस में व्यवहार करें।
1	(ii)	- - - - - - - - - - - ? (द) अच्छे व्यवहार वाला।
1	(iii)	- - - - - - - - - - - ? (ब) दिव्यतापूर्ण जीवन की।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
1	(iv)	"ईश्वर से प्रार्थना"।
1	(v)	कवि प्रभु से प्रार्थना कर रहा है, कि हे प्रभु!, मुझे ज्ञान दीजिए। सारे दुर्गुणों को दूर करें व हम सदाचारी बने, इसके साथ ही ब्रह्मचारी, धर्मरक्षक व वीर बने। दिव्यतापूर्ण जीवन प्राप्त करने की प्रार्थना कर रहा है।
1	(vi)	पद्यांश के अनुसार कवि झूठ नहीं बोलना चाहता है, साथ ही भूल से भी किसी अपकार को न करने की सोच रहा है।
6		
		खण्ड-(ब)
2	6.	'सूरदास को झोपड़े के जल जाने का दुःख न था, दुःख था उस पोटली का', सूरदास को उस पोटली का दुःख इसलिए था, क्योंकि उसमें उसके सम्पूर्ण जीवन की गाढ़ी कमाई थी। उस धन से उसे काफी काम करने थे, जैसे गया जाकर पिण्डदान करना, मिठुआ का विवाह करना व कुआँ बनवाना। लेकिन झोपड़ी में आग लगने से उसकी पोटली जलकर राख हो गई। यह राख उसकी अभिलाषाओं की राख थी। इन सब कारणों से सूरदास को पोटली का दुःख था।

BSER-181/202

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
2	7.	'बिस्कोहर की माटी' पाठ में गाँव में बरसात आने पर वातावरण एकदम सुहावना होता था। चारों तरफ पानी-ही-पानी फैल जाता था। बारिश के आने से रास्तों में किचड़ जमा हो जाता था। सारा वातावरण खिल-सा जाता था। लोगों के घरों में सांप व बिच्छु जैसे जीव-जन्तुओं का भय बना रहता था। मार्ग पर चलते वक्त सांपो से डर लगता था। लोग खेतों में धान की रोपाई करने लग जाते थे। गाँव में बरसात आने पर नाले व नदियाँ पानी से लबालब भर जाते थे।
1	8.	'अपना मालवा-खाऊ-उजाड़ू सभ्यता में' पाठ के आधार पर मालवा के सब राजा पानी को एकत्रित करना जानते थे। इसलिए तो उन्होंने अनेक होदो, जलाशयों व नदाकुण्डों का निर्माण किया था, आज के वैज्ञानिक मानते है कि पानी को संग्रहित करना वे ही जानते है, लेकिन मालवा प्रदेश के राजा यह कार्य प्राचीन काल से करते आ रहे है। मालवा में हाइड्रोजन कार्बन आक्साइड के गैस की वजह से तीन डिग्री सेल्सियस तापमान को बढ़ा दिया है, जिससे वातावरण खराब होता जा रहा है, पर्यावरण का अत्यधिक दोहन कीया जा रहा है।

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

9\. 'देवसेना का गीत' जयशंकर प्रसाद के 'स्कंदगुप्त' नाटक से लिया गया है। इसमें देवसेना मालवा के राजा बन्धुवर्मा की बहन है। हूणों के आक्रमण से आर्यावृत्त संकट में है। तब देवसेना कहती है कि 'प्रलय चल रहा अपने पथ पर' पंक्ति का आशय यह है कि, प्रलय मेरे जीवन रूपी रथ पर सवार है, मुझे अपने अन्तिम समय में भी इससे छुटकारा नहीं मिला। मुझे अपनी समस्त दुर्बलताओं का ज्ञान होने पर भी मैंने कभी हार नहीं मानी, तथा सम्पूर्ण दुःखों का सामना किया है।

10\. 'बारहमासा' के फागुन मास में विरह से नागमती की दशा अत्यधिक खराब हो गई। विरह के कारण वह दुबली होती जा रही है। प्रत्येक क्षण उसका शरीर क्षीण होता जा रहा है। फागुन मास में लोग गीत गा रहे है, जो नायिका के विरह को बढ़ा देते है। होली की आग उसके हृदय में जल रही है, जो उसे धीरे-धीरे खत्म कर देगी। अन्य सखियाँ रेशमी वस्त्र धारण करके अपने प्रियतम के साथ होली खेल रही है, परन्तु नायिका का श्रृंगार उसका नायक अपने साथ ले गया है, इसी कारण वह दुःखी है। वह कहती है कि अगर मैं मर जाऊ तो मेरी राख के कुछ कण मेरे प्रियतम के पैरों पर गिरा देना।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

11.

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

जन्म - सन् 1911 में कुशीनगर (उत्तरप्रदेश)

मूल नाम - सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन

प्रमुख पत्रिकाएँ - नवभारत टाइम्स, कल्पना, प्रतीक, नया प्रतीक, विशाल भारत और सैनिक

प्रमुख रचनाएँ - शेखर एक जीवनी, नदी के द्वीप, अपने-अपने अजनबी (उपन्यास); अरे यायावर रहेगा याद, एक बूँद सहसा उछली (यात्रा-वृतांत); त्रिशंकु, आत्मने-पद (निबंध संग्रह); विपथगा, शरणार्थी, कोठरी की बात, जयदोल, ये तेरे प्रतिरूप (कहानी-संग्रह)

प्रमुख काव्य-कृतियाँ - भग्नदूत, चिंता, हरी घास में क्षणभर, इन्द्रधनु रौंदे हुए, आंगन के पार द्वार, कितनी नावों में कितनी बार

प्रमुख सम्मान - साहित्य अकादेमी पुरस्कार, भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार, भारत भारती सम्मान।

अज्ञेय ने तार सप्तक परंपरा का सूत्रपात किया था। अनेक क्रान्तिकारी आंदोलनों में भाग लेने के कारण चार वर्ष जेल व दो वर्ष नजरबंद भी रहे। इन्होंने देश-विदेश की अनेक यात्राएँ की थी।

निधन - 1987 में।

BSER-18/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

12 - - - - - - - - - - - ?

'बालक बच गया' पाठ में एक आठ वर्ष का बालक अपनी उम्र से बड़े प्रश्नों का उत्तर आसानी से दे रहा था, क्योंकि वे प्रश्न उसे उसके पिता द्वारा पहले से ही रटा दिए गए थे। लेकिन पूछा गया कि 'तुम इनाम क्या लोगे'! यह सुनकर वह थोड़ा असहज हो गया और धीरे से बोला- लड्डू। यह सुनकर पिता व अध्यापक निराश हो गए, क्योंकि उन्होंने सोचा था कि यह पढ़ाई का पुतला कुछ पढ़ाई से संबंधित ही मांगेगा, पर ऐसा नहीं हुआ। यहाँ पर लेखक ने आज की शिक्षा पद्धति पर व्यंग्य किया है। जो वस्तुतः दोषपूर्ण है।

13. - - - - - - - - - - - ?

किसान को साझे में खेती करने के लिए हाथी ने कहा था। उसने किसान को यह पट्टी पढ़ाई की अगर वह उसके साथ साझे की खेती करेगा तो, उसे ही लाभ मिलेगा। तथा जंगल के छोटे- मोटे जानवरों से फसल की अच्छी रखवाली हो जाएगी। अगले ही दिन व पूरे जंगल में डुग्गी पीट आया की किसान के साथ खेती में उसका साझा है. अतः कोई भी उसे नुकसान नहीं पहुंचाएगा।

14. - - - - - - - - - - - ?

'रामचन्द्र शुक्ल' (1884-1941)

जन्म - उत्तरप्रदेश के बस्ती जिले के अगोना गाँव में।

रचनाएँ - हिन्दी साहित्य का इतिहास, गोस्वामी तुलसीदास

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

सूरदास, चिंतामणी (चार खण्ड) व रस मिमांसा।
रामचन्द्र शुक्ल ने इनके साथ ही भ्रमर गीत व जायसी ग्रन्थावली का संपादन भी किया।
शुक्ल जी उच्च कोटी के आलोचक, इतिहासकार व साहित्य चिंतक है। उनकी गद्य शैली विवेचनात्मक है। वे 1905 में हिन्दी नागरी प्रसारणी सभा में हिन्दी शब्द सागर को लेकर संपादन मण्डल से जुड़े थे।

(2) 15 मानवीकरण अलंकार - जहाँ अमूर्त भावों, निराकार वस्तुओं व प्राकृतिक वस्तुओं की तुलना मानवीय क्रियाओं से हो, वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है।
उदा०- मेघ आए बड़े बन-ठन के।

खण्ड - (स)

(3) 16 भरत राम के प्रति अटूट श्रद्धाभाव एवं सतत समर्पण रखते हैं। जब श्रीराम वन को गमन करते है, तब भरत अत्यधिक विलाप करते है, वह चित्रकुट की सभा में मुनि वशिष्ट व अन्य अतिथियों के सामने स्वंय को दोषी मानते है। वे कहते है कि मैं अपने प्रभू को भली प्रकार जानता हूँ कि उनका स्वभाव कैसा है, वे कभी अत्याचारी व आरोपी व्यक्ति पर भी क्रोध नही करते है, वे मुझे माफ कर देंगे

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उन्होंने बचपन में भी मेरा कभी अहित नहीं किया था। वे खेल-खेल में हार जाते थे तथा मुझे जिता देते थे, ताकि मुझे कोई पीड़ा न हो, उन्होंने मेरा कभी अहित नहीं कीया है। भगवान ने मेरी माँ को धरती पर मुझे व राम को अलग करने के लिए भेजा है। मैं उन्हें कुमाता नहीं कह सकता, क्योंकि एक कुमाता से योग्य पुत्र कैसे जन्म ले सकता है। यहाँ राम के वनगमन के पश्चात् भरत की मनोदशा का वर्णन किया गया है। इन सब कारणों का दोषी वे स्वंय को मानते हैं।

17. 'कुटज' पाठ के लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी है, जिन्होंने कुटज की निम्नलिखित विशेषताओं को उल्लेखित किया है-

(i) कुटज में अपराजेय जीवनी शक्ति होती है।
(ii) वह धुप-छाँव, आंधी व तुफान में एकसमान खड़ा रहता है।
(iii) वह पत्थरों में उगने वाला एक जंगली पौधा है।
(iv) वह स्वावलम्बी है।
(v) वह हमेशा हमें सुख-दुख में समान रहने का संदेश देता है।
(vi) वह हमेशा जिजीविषा बनाकर रहता है।
(vii) वह जब काम आता तब हमारा कोई साथ देने वाला पुष्प न हो।
(viii) उसे अगस्त मुनि के समान बताया गया है।
(ix) कुटज के पर्यायवाची नाम है - पहाड़फोड व गिरीगौरव आदि।

3

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
3	18	सूरदास पर 'खेल में रोते हो' की चेतावनी सुनकर प्रभाव यह पड़ा की वह खड़ा हो गया और राख को अपने हाथों में भरकर हवा में उड़ाने लगा, मानों वह विजय में उड़ा रहा हो। यह घीसू ने कहा था, जिससे उसमें संघर्ष का संचार होता है। वह सोचता की क्या हुआ अगर झोपड़ी जल गई तो, मैंने ही कमाई थी फिर से कमा लूंगा। यह जीवन भी तो एक खेल ही है। तब मिठुआ ने सूरदास से पूछा की अगर किसी ने हमारा घर सौ लाख बार जला दिया तो, तो उसने जवाब दिया कि "हम फिर से सौ लाख बार बना देंगे। इससे सूरदास के कर्मठ चारित्र का पता चलता है और बदला लेने के बजाय पुनर्निर्माण में विश्वास का भी। सूरदास का स्वभाव अत्यन्त विनम्र था। वह हमेशा सबका भला चाहता था। जब घीसू व मिठुआ खेल रहे थे, तो मिठुआ रोने लगता है, तब घीसू कहता है कि खेल में रोते हो। यह कथन सुनकर सूरदास में आशा का संचार होता है। तब वह अपने आँसुओं को पोछता है। तथा झोपड़ी की राख को हवा में उड़ाने लगता है, जैसे उसने उस पर विजय प्राप्त कर ली हो। तब सूरदास सोचता है कि यह जीवन भी तो एक खेल ही है, वह सारी कमाई मैंने ही थी। फिर से कमा लूंगा क्या है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड – (द)

19. संवाद पहुँचाने - - - - - - साँस भरी।

प्रसंग – प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक अंतरा भाग-2 में संकलित 'फणीश्वरनाथ रेणु' की कहानी 'संवदिया' से लिया गया है। इसमें संवदिया की विशेषताओं का वर्णन है।

व्याख्या – लेखक बताते है, कि संवाद का काम सभी लोग नहीं कर सकते। लेखक बताते है कि संवदिया वही हो सकता है जो भगवान द्वारा संवाद को हुबहू बनाया हो। लेकिन संवदिया के बारे में गाँव वालो की अवधारणा गलत बनी हुई थी, वह निठल्ला, कामचोर और पेटू आदमी ही संवदिया बनता है। और उस पर आगे नाथ न पीछे पगहा वाली कहावत लागू होती है। वह बिना मजदूरी के संवाद पहुचाता है, क्योंकि वह औरतो का गुलाम है, जरा सी मीठी बोली सुनकर जोश में आ जाता है। लेकिन संवदिया वही बन सकता है जो संवाद को उसी सुर व लय तथा मनोभाव से सुनाए, जिस सुर से संवाद सुनाया गया हो।

1.4
5

विशेष – (i) इसकी भाषा सरल, सहज व स्पष्ट है।

(ii) इसमें 'आगे नाथ न पीछे पगहा' वाली कहावत का प्रयोग हुआ है।

(iii) इसमें संवदिया की विशेषताओं का वर्णन किया गया है।

(iv) संवदिया का सामान्य अर्थ- संदेशों का आदान-प्रदान करने वाला।

(v) यह आंचलिक परिवेश से संबंधित है।

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

20 अमुक दिन अमुक बार - - - - - - - -
- - - - - - - - - - होवेंगे यशस्वी।

प्रसंग - प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक अंतरा भाग-2 में संकलित 'रघुवीर सहाय' की कविता 'वसंत आया' से लिया गया है। इसमें कवि बताते है कि आज के मनुष्य का प्रकृति से रिश्ता छूट गया है।

व्याख्या - कवि कहते है कि एक दिन मैंने कैलेण्डर को देखा, जिसमे वसंत पंचमी की छुट्टी का दिन था, क्योंकि इस दिन हमारे दफ्तर में भी छुट्टी होती है। आज हमें वसंत के आने का पता कैलेण्डर से चलता है पर प्रकृति में वसंत आज भी पहले की तरह ही आता है, कोंपले फूटती है, ढाक के जंगल दहकते हैं पर हम निरपेक्ष बने रहते है। हमारा ध्यान उन पर नहीं जाता है। कवि ने आज के मनुष्य की वास्तविक जीवन शैली पर व्यंग्य किया है।

विशेष - (i) भाषा सरल व स्पष्ट है।
(ii) आधुनिक जीवन शैली पर व्यंग्य किया है।
(iii) प्रकृति का वर्णन है।
(iv) मानवीकरण अलंकार है।
(v) 'रंग-रस' में अनुप्रास अलंकार है।
(vi) कवि ने बताया है कि आज के मनुष्य का प्रकृति से रिश्ता छूट गया है।

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

21

नियमित योग: आज की महती आवश्यकता

i) प्रस्तावना
ii) योग का महत्व
iii) योग की आवश्यकता
iv) उपसंहार

• प्रस्तावना – "योग ही जीवन है"
हमें अपने जीवन में आगे बढ़ने के लिए स्वस्थ रहना जरूरी है, लेकिन आज के समय में बाजार में इतनी खराब चीजे मिलती है तथा जंक फूड खाने से हमारा स्वास्थ्य निरन्तर खराब होता जा रहा है इसको सन्तुलित करने के लिए आवश्यक है 'योग'।

• योग का महत्व – हमारे जीवन में योग का महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि योग करने से ही मनुष्य अपने शरीर के स्वास्थ्य को सन्तुलित रख पाते है। योग करने से हमारे वजन में कमी आती है, जिससे हमारा चलना व फिरना आसान हो जाता है। हमें नियमित रूप से योग करना चाहिए। क्योंकि योग करने से हमारी मांसपेसियाँ सक्रीय होगी जो भोजन पचाने में सहायक सिद्ध होती है। ये इन्द्रियां रक्त का संचरण करके हमारे शरीर को स्वस्थ व तजा बनाकर रखेगी अगर हम रोज योग नहीं करते है तो यह हमारे स्वास्थ्य के लिए कदापि उचित नहीं है। क्योंकि थोड़ा सा समय हमें अपने शरीर को भी देना चाहिए। हमारा स्वास्थ्य ही हमारी असली

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

पूँजी है, इसके बिना हम लम्बे समय तक नहीं जी सकते है, इसलिए योग का हमारे जीवन में महत्त्व है। आजकल तो इंटरनेट पर अनेक विडियोज व पोस्ट्स है जिनसे हम योग करना सिख सकते है।

• योग की आवश्यकता - हमारे जीवन में योग का जो स्थान है वह अतुलनीय है, जिसकी तुलना किसी नही की जा सकती है, क्योंकि योग से ही हम अपने स्वास्थ्य की तुलना कर सकते है।

बिना योग के शरीर का स्वस्थ रहना सम्भव नही, असंभव है, क्योंकि योग करने से हमारा शरीर संतुलित होता है। हमारा वजन संतुलित रहता है। मासपेसियां सक्रीय होती है, जो हमारे लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी, क्योंकि कोई भी मनुष्य बिना योग के स्वस्थ नही रह सकता है। जीवन में योग का महत्त्व सर्वोपरि है।

आज हम देखते है, कि लोग जिम वगैरह में जाते है। तथा अपने शरीर को मजबूत बनाते है। इसके डाइट करना बहुत जरूरी है। क्योंकि सन्तुलित भोजन करने से मनुष्य का पाचन तंत्र ठीक से काम करता है तथा रक्त भी सक्रीय होकर संचरण करता है। इसलिए योग का हमारे जीवन में महत्त्व है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उपसंहार- योग करने से हमारा स्वास्थ्य संतुलित रहता है। योग करने से हमारा मस्तिष्क तेज होता है। इसी प्रकार ऐसे बहुत से फायदे हैं, जिनसे हमारा स्वस्थ बना रहता है।

"योग भगाएं रोग"

महत्वपूर्ण बिन्दु -

(i) योग से व्यक्ति का मन, तन दोनों स्वस्थ रहते है।
(ii) योग से व्यक्ति की सोचने की क्षमता बढ़ती है।
(iii) योग के (ध्यान करने से) हमारी ज्ञानइन्द्रीयों पर नियंत्रण होता है।
(iv) योग से समाज में जागरूकता आती है, क्योंकि जब एक व्यक्ति योग करता है, तो धीरे-धीरे सब वैसा ही करते हैं।
(v) योग से व्यक्ति की भुजाओं में बल आता है।
(vi) योग से व्यक्ति स्वंय तथा दुर्बल व्यक्तियों की रक्षा कर सकता है।
(vii) योग महिलाओं को भी करना चाहिए।
(viii) मुख्यत: योग -
(i) ताड़ासन, (ii) वज्रासन, (iii) मयूरासन, (iv) पादहस्तासन, (v) पद्मासन, (vi) अनुलोम-विलोम (vii) भ्रामरी योग (viii) ध्यान (ix) कपालभाँति (x) कुम्बक, (xi) व्यायाम,
(ix) योग से व्यक्ति स्वस्थ रहता है।
(x) योग से सारे रोग दूर होते हैं।

-ॐ- कार्य समाप्त -ॐ-

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-181/2026

26

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-181/2026

[illegible]